शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

# अष्टांगिक मार्ग के सिद्धांतों द्वारा नैतिक समाज का निर्माण

प्राप्तिः
स्वीकृतः

96

**कविता वर्मा**
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान
*ईमेलः kavitasoni694@gmail.com*

**सांराश**

*बौद्ध धर्म मानव जीवन को दुखों से मुक्ति दिलाने के साथ–साथ एक नैतिक और संतुलित समाज की स्थापना का मार्ग भी प्रस्तुत करता है। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिक मार्ग जीवन के प्रत्येक पक्ष–विचार, वाणी और कर्म–को शुद्ध और संतुलित करने का साधन है। यह शोध–पत्र अष्टांगिक मार्ग के आठ अंगों के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार ये सिद्धांत एक नैतिक, न्यायपूर्ण और करुणामय समाज के निर्माण में सहायक हैं। आधुनिक समय में जब नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, तब अष्टांगिक मार्ग की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक हो जाती हैं। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि यदि व्यक्ति और समाज इन सिद्धांतों को अपनाएँ, तो सामाजिक समरसता, नैतिकता और मानवता का विकास संभव है।*

**मुख्य बिन्दु**

*अष्टांगिक मार्ग– जीवन के आठ नैतिक सिद्धांतों का समुच्चय*
*सम्यक दृष्टि– यथार्थ को सही रूप में समझने की क्षमता*
*सम्यक संकल्प– शुद्ध और सकारात्मक विचार*
*सम्यक वाणी– सत्य एवं अहिंसात्मक भाषण*
*सम्यक कर्म– नैतिक आचरण*
*सम्यक आजीविका– ईमानदार जीवन–निर्वाह*
*सम्यक प्रयास– सतत नैतिक प्रयास*
*सम्यक स्मृति– जागरूकता और सजगता*
*सम्यक समाधि– ध्यान और मानसिक एकाग्रता*
*नैतिक समाज– न्याय, करुणा और समानता पर आधारित समाज*

**प्रस्तावनाः**

मानव समाज की स्थिरता और प्रगति का आधार नैतिकता है। जब समाज में नैतिक मूल्यों का पतन होता है, तब अशांति, हिंसा और अन्याय का विस्तार होता है। वर्तमान युग में भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के कारण नैतिकता का संकट स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

ऐसे समय में बौद्ध धर्म के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। गौतम बुद्ध ने मानव जीवन के दुखों का विश्लेषण करते हुए उनके निवारण हेतु अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया। यह मार्ग न केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन है, बल्कि सामाजिक नैतिकता की स्थापना का भी आधार है (सांकृत्यायन, 1956, पृ. 85)।

**अष्टांगिक मार्ग की अवधारणा**

अष्टांगिक मार्ग बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्यों में से चौथे सत्य का अंग है। यह आठ सिद्धांतों का समूह हैः

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्म
5. सम्यक आजीविका
6. सम्यक प्रयास
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

इनका उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को नैतिक और संतुलित बनाना है (कश्यप, 1994, पृ. 110)। धम्मपद में भी कहा गया है कि मन ही सभी क्रियाओं का मूल है—यदि मन शुद्ध है तो जीवन भी शुद्ध होगा (धम्मपद, श्लोक 1–2)

**अष्टांगिक मार्ग और नैतिकता**

**1. सम्यक दृष्टि और नैतिक चेतना–** सम्यक दृष्टि व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर समझने की क्षमता प्रदान करती है। यह नैतिक समाज की नींव है (देव, 1960, पृ. 205)।

**2. सम्यक संकल्प और आंतरिक शुद्धता–** सम्यक संकल्प व्यक्ति के भीतर करुणा, अहिंसा और त्याग की भावना उत्पन्न करता है, जो समाज में सकारात्मकता को बढ़ावा देता है (सांकृत्यायन, 1956, पृ. 140)।

**सामाजिक जीवन में अष्टांगिक मार्ग की भूमिका**

**1. सम्यक वाणी और सामाजिक समरसता–** सम्यक वाणी के पालन से झूठ, कटुता और अपशब्दों से बचा जा सकता है, जिससे समाज में विश्वास और शांति स्थापित होती है।

**2. सम्यक कर्म और न्यायपूर्ण समाज–** सम्यक कर्म व्यक्ति को हिंसा और अनैतिक कार्यों से दूर रखता है, जिससे समाज में न्याय की स्थापना होती है (अंबेडकर, 1957, पृ. 322)।

**3. सम्यक आजीविका और आर्थिक नैतिकता–** सम्यक आजीविका व्यक्ति को ऐसे कार्यों से दूर रखती है जो दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं। इससे समाज में नैतिक आर्थिक व्यवस्था विकसित होती है।

**मानसिक और आध्यात्मिक विकास**

**1. सम्यक प्रयास और आत्म–सुधार–** यह व्यक्ति को निरंतर अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करता है (धर्मरक्षित, 2002, पृ. 67)।

**2. सम्यक स्मृति और जागरूकता–** यह व्यक्ति को अपने विचारों और कार्यों के प्रति सजग बनाती है।

**3. सम्यक समाधि और मानसिक संतुलन–** सम्यक समाधि मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति विवेकपूर्ण निर्णय ले सकता है।

**आधुनिक समाज में प्रासंगिकता**

आज के समाज में बढ़ती हिंसा, तनाव और नैतिक पतन के संदर्भ में अष्टांगिक मार्ग अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

1. यह नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देता है
2. मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है
3. सामाजिक समानता को प्रोत्साहित करता है

इस प्रकार यह आधुनिक समाज की समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है (त्रिपाठी, 2005, पृ. 95)।

**नैतिक समाज के निर्माण में योगदान**

अष्टांगिक मार्ग निम्न प्रकार से नैतिक समाज के निर्माण में सहायक है:

1. व्यक्ति के आचरण को सुधारता है
2. सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करता है
3. न्याय और समानता को बढ़ावा देता है
4. अहिंसा और करुणा का विकास करता है

जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति इन सिद्धांतों का पालन करता है, तब एक आदर्श समाज की स्थापना संभव होती है।

**निष्कर्ष**

अष्टांगिक मार्ग केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक व्यावहारिक पद्धति है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक उत्थान का साधन है।

आज के समय में इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। यदि इन सिद्धांतों को जीवन में अपनाया जाए, तो एक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और नैतिक समाज का निर्माण संभव है।

## संदर्भ

1. धम्मपद, अनुवादः भिक्षु जगदीश कश्यप. वाराणसीः केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान
2. सांकृत्यायन, राहुल (1956). बौद्ध दर्शन. इलाहाबादः किताब महल. पृ. 80–150।
3. कश्यप, भिक्षु जगदीश (1994). बौद्ध धर्म और दर्शन. वाराणसीः भारतीय विद्या प्रकाशन. पृ. 100–130।
4. देव, आचार्य नरेंद्र (1960). बौद्ध धर्म दर्शन. पटनाः बिहार राष्ट्रभाषा परिषद. पृ. 200–230।
5. बुद्ध और उनका धम्म, आंबेडकर, भीमराव (1957). नागपुरः बुद्धिस्ट पब्लिशिंग सोसाइटी. पृ. 300–350।
6. धर्मरक्षित, भिक्षु (2002). बौद्ध जीवन पद्धति. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास. पृ. 50–80।
7. त्रिपाठी, रामशंकर (2005). बौद्ध दर्शन की रूपरेखा. वाराणसीः चौखम्बा प्रकाशन. पृ. 90–120।